15 OCT 12 2026.qxd 14-10-2026 20:40 Page 1

नवरात्र विशेष



नारी शक्ति और सम्मान का संदेश

नवदुर्गा के नौ स्वरूपों को केवल अलग-अलग धार्मिक रूपों के रूप में देखना इस परंपरा की व्यापकता को सीमित कर देता है। प्रत्येक स्वरूप जीवन के किसी न किसी महत्वपूर्ण मूल्य से जुड़ा है। मां शैलपुत्री स्थिरता का संदेश देती हैं, ब्रह्मचारिणी तप और संयम का, चंद्रघंटा साहस का, कूष्मांडा सृजन और ऊर्जा का, स्कंदमाता ममता का, कात्यायनी न्याय का, कालरात्रि निर्भयता का, महागौरी शांति और पवित्रता का तथा सिद्धिदात्री आध्यात्मिक पूर्णता का प्रतीक हैं। इस तरह नवरात्र की नौ रातें केवल पूजा और उपवास तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि व्यक्ति को अपने भीतर मौजूद कमजोरियों और शक्तियों को पहचानने का अवसर भी देती हैं। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में शक्ति की उपासना का इतना व्यापक महत्व रहा है। दुर्गा पूजा का स्वरूप भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग दिखाई देता है, लेकिन इसके मूल में मां शक्ति के प्रति श्रद्धा समान रहती है। पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा को भव्य सार्वजनिक उत्सव का रूप मिलता है। बड़े-बड़े पंडाल, कलात्मक प्रतिमाएं, रोशनी और सांस्कृतिक कार्यक्रम इसके आकर्षण को बढ़ाते हैं। वहीं उत्तर भारत में नवरात्र के दौरान मां के मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना, जागरण और कन्या पूजन की परंपरा प्रमुख रहती है। देश के अलग-अलग हिस्सों में स्थानीय परंपराएं इस पर्व को अपनी विशिष्ट पहचान देती हैं। यही भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी खूबसूरती है कि अलग-अलग भाषाओं, परंपराओं और रीति-रिवाजों के बावजूद आस्था के केंद्र एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। दुर्गा पूजा और नवरात्र का अंतिम संदेश विजयादशमी के साथ सामने आता है। मां दुर्गा द्वारा महिषासुर के वध की कथा और भगवान राम द्वारा रावण पर विजय की परंपरा, दोनों ही बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देती हैं। यह पर्व व्यक्ति को याद दिलाता है कि अहंकार, हिंसा, अन्याय और अधर्म चाहे कितने भी शक्तिशाली क्यों न दिखाई दें, अंततः सत्य और धर्म की विजय होती है। विजयादशमी केवल रावण या महिषासुर के पुतले जलाने का दिन नहीं है। इसका व्यापक अर्थ अपने भीतर मौजूद अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह और नकारात्मकता पर विजय प्राप्त करना भी है। इसी दृष्टि से दुर्गा पूजा आत्मचिंतन और आत्मशुद्धि का पर्व भी बन जाती है। मां दुर्गा की पूजा भारतीय परंपरा में नारी शक्ति को दिए गए महत्व को भी सामने लाती है। देवी को कभी मां, कभी योद्धा, कभी सृजनकर्ता और कभी ज्ञान एवं सिद्धि की शक्ति के रूप में पूजा जाता है। यह विविधता बताती है कि नारी की भूमिका किसी एक सीमा में बांधकर नहीं देखी जा सकती।

दुर्गा पूजा के दौरान घरों और मंदिरों में देवी की आराधना करने के साथ कन्याओं को देवी का स्वरूप मानकर सम्मान देने की परंपरा भी इसी विचार को मजबूत करती है। हालांकि इस आध्यात्मिक भावना को वास्तविक जीवन में भी महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा, समान अवसर और अधिकारों के रूप में अपनाना आवश्यक है। देवी की पूजा तभी सार्थक मानी जा सकती है, जब समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता का भाव व्यवहार में भी दिखाई दे। दुर्गा पूजा सामाजिक मेलजोल का भी बड़ा माध्यम है। सार्वजनिक पंडालों में अलग-अलग वर्गों और समुदायों के लोग एक साथ जुटते हैं। पूजा समितियां सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करती हैं और स्थानीय स्तर पर सामूहिक भागीदारी देखने को मिलती है।

कई स्थानों पर जरूरतमंद लोगों के लिए भोजन, चिकित्सा शिविर और अन्य सामाजिक गतिविधियां भी आयोजित की जाती हैं। इस तरह दुर्गा पूजा धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत करती है। यह पर्व लोगों को एक-दूसरे से जोड़ता है और सामूहिक उत्सव के माध्यम से समाज में सहयोग और सद्भाव का संदेश देता है। समय के साथ दुर्गा पूजा के आयोजन का स्वरूप जरूर बदला है, लेकिन मां दुर्गा के प्रति आस्था कम नहीं हुई। आज आधुनिक तकनीक, डिजिटल माध्यम और सोशल मीडिया ने दुर्गा पूजा को दुनिया के अलग-अलग हिस्सों तक पहुंचा दिया है। बड़े शहरों के साथ विदेशों में बसे भारतीय समुदाय भी दुर्गा पूजा का आयोजन करते हैं। इसके बावजूद पूजा की मूल भावना वही है- शक्ति की आराधना, बुराई पर अच्छाई की विजय, परिवार और समाज की खुशहाली तथा मानव जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार। आधुनिकता और परंपरा का यह मेल दुर्गा पूजा को आज भी प्रासंगिक बनाए हुए है। मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा दरअसल मनुष्य की आंतरिक यात्रा का प्रतीक भी मानी जा सकती है। शैलपुत्री से शुरू होकर सिद्धिदात्री तक पहुंचने वाली यह यात्रा बताती है कि शक्ति बाहर से मिलने वाली कोई वस्तु नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर भी मौजूद एक चेतना है। जरूरत केवल उसे पहचानने और सही दिशा में इस्तेमाल करने की है। नवरात्र का संदेश यही है कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयां आएं, धैर्य, तप, साहस, सकारात्मकता, करुणा, न्याय, निर्भयता और शांति के सहारे उनका सामना किया जा सकता है। मां दुर्गा के नौ स्वरूप इसी जीवन दर्शन को अलग-अलग रूपों में सामने रखते हैं। दुर्गा पूजा इसलिए केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की उस सोच का उत्सव है, जिसमें शक्ति को सृजन और संरक्षण से जोड़ा गया है। मां दुर्गा की आराधना हमें याद दिलाती है कि शक्ति का सर्वोच्च उद्देश्य केवल विजय नहीं, बल्कि धर्म की स्थापना, कमजोरों की रक्षा, अन्याय का अंत और समाज में संतुलन कायम करना है। यही कारण है कि हर वर्ष नवरात्र और दुर्गा पूजा के अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु पूरे विश्वास और भक्ति के साथ मां के चरणों में शीश झुकाते हैं और जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और शक्ति की कामना करते हैं।

खूनी व बादी बवासीर में बेहद असरकारक
अर्शवेदा कैप्सूल


सुविचार
खुद को प्रेरित करें, क्योंकि कोई और आपकी मदद नहीं कर सकता।
• 100% आयुर्वेदिक • सुरक्षित • असरदार
Customer Care : 9628078000
www.rphealthgroup.com
Also available at TATA 1mg amazon Flipkart



पूर्णता का भाव

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

जब जीवन के प्रति आपकी दृष्टि व्यापक और संदर्भ विशाल हो जाता है, तब आप तुलना करना छोड़ देते हैं। तुलना करना औचित्यहीन और निरर्थक है। सदैव कोई न कोई आपसे आगे होगा और कोई आपसे पीछे। यह दुनिया हमें प्रतिस्पर्धी लगती है, किन्तु यह केवल सापेक्षिक है। जैसे ट्रेन सभी डिब्बों को गति देती है, वैसे ही एक ही दिव्य शक्ति पूरे संसार और मानव जाति को संचालित कर रही है। यह सर्वथा अप्रासंगिक है कि कौन कहाँ खड़ा है। सब आगे बढ़ेंगे और सबको उतरने का अवसर मिलेगा। अपने सहकर्मियों और आस-पास के लोगों से अपनी तुलना कदापि न करें। यदि यह आवश्यक लगे, तो स्वयं की तुलना इतिहास और विश्व के महान व्यक्तित्वों एवं प्रतिमानों से करें ताकि आप देख सकें कि आप अपना सर्वश्रेष्ठ कैसे दे सकते हैं। यह आपके लिए सहायक सिद्ध होगा। यह आपको निरंतर प्रेरित रखेगा। हर किसी के जीवन में अच्छे और बुरे क्षण आते हैं। जिन्हें आप बहुत भाग्यशाली मानते हैं, उनके जीवन में भी दुःखद क्षण आए हैं और जिन्हें आप दुर्भाग्यशाली मानते हैं, उनके जीवन में भी सुखद क्षण आए हैं। जीवन में घट रही इन घटनाओं को अवश्यंभावी मानकर प्रगति पथ पर अग्रसर रहना चाहिए। हमारे अंतःकरण में ऐसी प्रवृत्ति निहित है कि हम उस व्यक्ति से ईर्ष्या करने लगते हैं, जो हमसे श्रेष्ठ कार्य कर गया हो। अपने ही पिछले प्रदर्शन से तुलना करना उत्तम है, यह स्वस्थ है। लेकिन यदि आप दूसरों से तुलना करने लगते हैं, तो अधिक संभावना है कि आप ईर्ष्या महसूस करेंगे। ईर्ष्या के कारण आप अपने गलत कार्यों को भी उचित सिद्ध करने लगते हैं, क्योंकि ईर्ष्या आपकी विवेक शक्ति पर आवरण बन जाती है। यह आपकी बुद्धि को धुंधला कर देती है। ईर्ष्या से मुक्त होकर, समभाव के साथ अपना कार्य करें। जब आप सफलता या असफलता का विचार न करके अपना ध्यान कार्य पर केंद्रित करते हैं, तभी आप अपना 100 प्रतिशत दे पाते हैं। अक्सर परिणाम की चिंता ही आपको अपना पूरा प्रयास करने से रोकती है। यदि आप किसी खेल प्रतियोगिता में भाग लें और आपको विजय या पराजय का पूर्वानुमान हो, तब आप पूरा मन लगाकर नहीं खेलेंगे। यदि आप विजय या पराजय की चिंता नहीं करते हैं, परिणामों का चिंतन नहीं करते हैं और अपना 100 प्रतिशत देते हैं, तब वह वास्तविक अर्थों में खेल होता है और उसमें सच्चा आनंद होता है। योगी का अर्थ है - जो हर कार्य को पूर्णता के साथ करता है। वह हर कार्य को पूर्णता के भाव से करता है, क्योंकि उसका मन समभाव में स्थित होता है। जब आप अपने कार्य को एक खेल की तरह लेते हैं तब आप परिणाम से अप्रभावित रहते हैं।

पाकिस्तानमें दिखी नवरात्रकी रौनक

भारत में नवरात्रि का त्योहार बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। इन दिनों मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ती है और चारों ओर भक्ति का माहौल नजर आता है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी हिंदू समुदाय के लोग नवरात्रि का पर्व मनाते हैं? हाल ही में वहां से सामने आए एक वीडियो में त्योहार



की रौनक देखने को मिल रही है। मंदिरों को सजाया हुआ देखा जा सकता है। श्रद्धालु माता के दर्शन करने के लिए पहुंच रहे हैं और पूजा-अर्चना करते दिखाई दे रहे हैं। मंदिर परिसर में लोगों की मौजूदगी और उत्सव जैसा माहौल बना रहा है. नवरात्रि के मौके पर श्रद्धालु एक साथ इकट्ठा होकर पूजा करते और त्योहार मनाते नजर आ रहे हैं.लोगों को मंदिरों की सजावट और भक्तों की भीड़ ने भारत के त्योहारों की याद दिला दी. वहीं, पाकिस्तान में हिंदू समुदाय के लोग रहते हैं और कई जगहों पर मंदिरों में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. दीपावली और नवरात्रि जैसे त्योहार भी समुदाय के लोग अपनी आस्था और परंपराओं के अनुसार मनाते हैं. भारत में नवरात्रि का त्योहार बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

गरबा-सिर्फ नृत्य नहीं, शक्ति आराधना का खास तरीका

नवरात्रि के नौ दिन गरबा खेला जाता है। वैसे तो ये एक तरह का डांस है, जिसमें महिला और पुरुष एक घेरा बनाकर बहुत ही व्यवस्थित ढंग से नाचते हैं लेकिन वास्तव में गरबा सिर्फ एक डांस फॉर्म से काफी ज्यादा है. इसे मां भगवती की अराधना का हिस्सा माना जाता है।



नवरात्रि में मां दुर्गा को प्रसन्न करने और उनकी कृपा पाने के लिए सिर्फ उपवास ही नहीं रखा जाता है, बल्कि डांस भी किया जाता है. गरबा ऐसा ही एक डांस फॉर्म है, जो गुजरात समेत देश के कई हिस्सों में किया जाता है। गरबा सिर्फ एक नृत्य नहीं, बल्कि मां दुर्गा यानी शक्ति की आराधना का खास तरीका है। इसमें महिलाएं और पुरुष एक साथ तालियां बजाते हुए गोल घेरे में डांस करते हैं,मान्यता है कि गरबा का गोल घेरा जीवन के चक्र और देवी शक्ति की निरंतरता का प्रतीक है. इसके केंद्र में रखा मिट्टी का दीपक मां की दिव्य शक्ति और आत्मा का प्रतीक माना जाता है। गुजरात में गरबा की परंपरा सदियों पुरानी है, लेकिन समय के साथ इसका स्वरूप बदलता गया है. आज यह धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक मेलजोल और सांस्कृतिक पहचान का भी बड़ा हिस्सा बन चुका है। आइए जानते हैं कि गरबा की शुरुआत कैसे हुई और नवरात्रि में गोल घेरा बनाकर नाचने का क्या महत्व है.गरबा गुजरात का पारंपरिक लोकनृत्य है, जिसे खासतौर पर नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा की पूजा के दौरान किया जाता है. गरबा शब्द संस्कृत के 'गर्भदीप' से जुड़ा माना जाता है. इसका संबंध मिट्टी के उस घड़े से है, जिसमें छोटे-छोटे छेद होते हैं और अंदर दीपक जलाया जाता है.इस घड़े को मानव शरीर और इसके अंदर जलने वाले दीपक को आत्मा का प्रतीक माना जाता ह। गरबा के माध्यम से देवी शक्ति की आराधना की जाती है। पहले महिलाएं घरों और मंदिरों के आंगन में मां की स्थापना करती थीं, आरती गाती थीं और फिर गोल घेरा बनाकर गरबा करती थीं.गरबा में नर्तक एक-दूसरे के साथ गोल घेरे में घूमते हैं। इस दौरान वे तालियां बजाते हैं और संगीत की लय पर कदम मिलाते हैं। गोल घेरा जीवन के निरंतर चलने वाले चक्र और शक्ति की निरंतरता से जोड़कर देखा जाता है. नृत्य के दौरान हर व्यक्ति अपनी धुरी पर घूमता है, लेकिन बड़े घेरे का हिस्सा बना रहता है. यह सामूहिकता और आपसी तालमेल को भी दर्शाता है. गरबा की शुरुआत आमतौर पर धीमी गति से होती है। जैसे-जैसे ढोल और संगीत की लय तेज होती है, नृत्य की गति भी बढ़ती जाती है. गरबा की शुरुआत कब हुई, इसकी कोई निश्चित तारीख उपलब्ध नहीं है. नृत्य विशेषज्ञों के अनुसार, इसकी परंपरा गुजरात के राजघरानों के साथ-साथ किसानों और ग्रामीण समुदायों से भी जुड़ी रही है। लोक मान्यताओं में गरबा और रास का संबंध भगवान कृष्ण के समय से भी जोड़ा जाता है। गुजरात में अंबाजी शक्तिपीठ की स्थापना के बाद देवी की आराधना में गरबा का महत्व और बढ़ा। पहले गरबा मुख्य रूप से महिलाओं तक सीमित था. वे परिवारों और समुदायों में गीतों और नृत्य की परंपरा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाती थीं। बाद में पुरुष भी इसमें शामिल होने लगे।

एक छोटा सा काम किसीकी जिंदगी बदल सकता है-रश्मिका मंदाना

विजय देवरकोंडा और रश्मिका मंदाना शादी के बाद पहली बार फिल्म रणबाली में नजर आने वाले हैं। फिल्म का सभी को बेसब्री से इंतजार है। फिल्म में रश्मिका जयम्मा का मजबूत किरदार निभाने वाली हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने बताया कि इस किरदार ने और भारत के सबसे काले अध्यायों में से एक फिल्म ने उन्हें काफी इंस्पायर किया है। णबाली में जयम्मा के किरदार से रश्मिका मंदाना इतनी इंस्पायर हुईं कि उन्होंने रियल में 400 परिवार की जिम्मेदारी उठाई। एक्ट्रेस का यह कदम जरूरतमंद परिवारों की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक बड़ी पहल है। रश्मिका मंदाना ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करते हुए बताया कि वह वैसे इन चीजों को निजी रखना ही पसंद करती हैं, लेकिन वह लोगों के साथ ये जानकारी इसलिए शेयर कर रही हैं, क्योंकि वह चाहती हैं कि जैसे वो रणबाली में अपने जयम्मा के किरदार से इंस्पायर हुई हैं, ठीक वैसे ही लोग भी इससे प्रेरित हों। एक्ट्रेस ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्रान पर लिखा, मैंने 400 परिवारों को गोद लिया है।मैं तीन महीनों तक इन परिवारों की मदद करना चाहती हूं और आगे अगले एक साल तक इस सिलसिले को जारी रखना चाहती हूं। मुझे उम्मीद है कि इससे उन परिवारों का किराने का पैसा बचेगा और वह उससे बचत करके अपने भविष्य को बेहतक बना पाएंगे। रश्मिका मंदाना ने अपनी पोस्ट में आगे लिखा, आपकी एक छोटी सी की गई दया किसी की जिंदगी बदल सकती है। आपको नेक काम करने के लिए कुछ बड़ा करना ही जरूरी नहीं है। आइए हम सब एक छोटी सी पहल से शुरुआत करें। यकीन मानिए, इन चेहरों की मुस्कान मेरे लिए उन तमाम रातों के जागने, चोटों, संघर्षों, दर्द, आंसुओं और उन सभी मुश्किलों से कहीं ज्यादा कीमती है, जिनसे मुझे अपने कामकाजी वर्षों के दौरान गुजरना पड़ा है। यह अनमोल है। विजय देवरकोंडा और रश्मिका मंदाना स्टारर फिल्म रणबाली की बात करें तो यह मूवी 16 अक्टूबर को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। फिल्म में विजय-रश्मिका के अलावा अरनोल्ड वोस्लू भी अहम भूमिका में दिखाई देंगे। राहुल संकृत्यान के निर्देशन में बनी मूवी को तेलुगू के साथ-साथ हिंदी, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषा में रिलीज किया जाएगा।



गजब है शौक, ३९ साल से नहीं कटाई मूंछें



किसी को लंबे बाल रखने का शौक होता है, तो कोई अपनी दाढ़ी को अलग अंदाज में रखता है। लेकिन सिंधोरा काशी के रहने वाले राका का शौक सबसे अलग है। उनकी मूंछें करीब डेढ़ मीटर लंबी हैं और उन्होंने पिछले 39 साल से इन्हें नहीं कटवाया है। इतनी लंबी मूंछों को संभालकर रखना आसान नहीं है, लेकिन राका को इनसे खास लगाव है। यही वजह है कि वह रोज इनकी देखभाल करते हैं और इस पर हर महीने करीब एक हजार रुपये तक खर्च करते हैं। आज के समय में जहां लोग अपने लुक के हिसाब से मूंछों को छोटा रखते हैं, वहीं राका ने अपनी लंबी मूंछों को ही अपनी पहचान बना लिया है। उनकी मूंछें देखने वाले लोग भी हैरान रह जाते हैं। 39 साल से मूंछें नहीं कटवाने का उनका शौक आज भी जारी है. जैसे-जैसे मूंछों की लंबाई बढ़ी, उनकी देखभाल की जिम्मेदारी भी बढ़ती गई. इसके बावजूद राका अपनी मूंछों का पूरा ध्यान रखते हैं। राका बताते हैं कि लंबी मूंछों को संभालकर रखने के लिए उनकी नियमित देखभाल करनी पड़ती है।

हीरे जैसा कीमती है ये दुर्लभ पौधा, कहलाता है कलयुगकी संजीवनी

भारत में कई पेड़-पौधे अब विलुप्त होने की कगार हैं। ऐसा ही एक दुर्लभ पौधा है जो दस बीमारियों को कंट्रोल करने में सहायक है। इसे कलयुग की संजीवनी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे मैजिक स्लेट ट्री है. माना जाता है कि इस पेड़ की छाल से घाव बहुत तेजी से भरता है। आयुर्वेद-लोक चिकित्सा में लंबे समय से इसका उपयोग किया जाता रहा है। पुराने जमाने में इसकी लकड़ी से कटोरे बनाए जाते हैं। दूध प्राकृतिक तरीके से दही बन जाता है। इसके पत्ते का अर्क बहुत उपयोगी माना



जाता है. इसका नाम दहिमन है। सबसे दिलचस्प बात यह है कि दहिमन पेड़ की पत्तियां पलाश से मिलती-जुलती होती हैं. तना मजबूत होता है। इसकी छाल बहुत ही औषधीय होती है. छाल के काढ़े का इस्तेमाल नशा उतारने में होता है। छत्तीसगढ़ के जंगलों में यह पौधा बहुत पाया जाता था लेकिन अब इनकी संख्या सिर्फ 10 ही बताई जाती है। इस पेड़ को लेकर कई नए शोध हो रहे हैं. बताया जाता है कि इसमें एंटी कैंसर, एंटी बीपी जैसे कई विशेष गुण हैं। दिल्ली-हिमाचल में भी यह पौधा पाया जाता है. अब इस पौधे के संरक्षण के लिए कई लोग पर्यावरणविद प्रयास कर रहे हैं। इस दुर्लभ प्लांट के बारे में कहा जाता है कि यह गंभीर बीमारियां को ठीक करने में मदद करता है. विदेश में भी इसकी मांग बढ़ी है।

पुराने दौरके रिश्तोंसे लें सीख

आजकल अपनी पसंद से शादी करना यानी लव मैरिज कोई नई बात नहीं है। हालांकि, यह भी एक कड़वी सच्चाई है कि ऐसे रिश्तों में भी अक्सर दरारें, धोखे और तलाक की बातें सामने आने लगी हैं। आपने कभी सोचा है कि आखिर ऐसा क्यों होता है? लव मैरिज का सीधा-सा अर्थ है कि आपने किसी को सच्चे प्रेम के कारण अपने जीवन में शामिल किया है। जब आपने अपनी ही मर्जी से किसी का हाथ थामा है, तो फिर बीच सफर में उसे छोड़ने या किसी और की तरफ आकर्षित होने का क्या तुक है? अगर आप लव मैरिज के बाद तलाक या धोखे के बारे में सोचते हैं, तो आप बिल्कुल गलत रास्ते पर हैं और आपको खुद को सुधारने की सख्त जरूरत है। एक वक्त था जब दूल्हा-दुल्हन शादी की रस्मों के दौरान ही पहली बार एक-दूसरे को ठीक से देखते थे। इसके बावजूद, उनका रिश्ता ताउम्र बिना किसी खटास के बेहद खूबसूरती से चलता था और परिवार भी फलता-फूलता था। अगर आप रिश्ते में धर्म और ईमानदारी का पालन करेंगे, तो परिवार हमेशा खुशहाल रहेगा। हालांकि, अगर आप गलत रास्ता चुनेंगे, तो रिश्ते का टूटना तय है। अगर आप किसी के साथ रिश्ते में हैं, तो कुछ खास बातों पर गौर करके आप एक धोखेबाज इंसान को आसानी से पहचान सकते हैं, क्या आपका साथी अब पहले की तरह आपको समय नहीं देता? क्या ट्रांसपेरेंसी पर टिकी होती है। जो इंसान आपकी भावनाओं को अहमियत न दे, हर बात पर आपको ही गलत ठहराए और आपकी इज्जत न करे, वह कभी एक अच्छा



वह अब आपकी बातों में कम दिलचस्पी लेता है या छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ जाता है? अगर हां, तो इसका मतलब हो सकता है कि अब उसका ध्यान कहीं और है। अगर आपका साथी आपसे अपनी निजी जिंदगी की बातें शेयर करने से बचता है, अपना फोन आपसे छिपाता है या आपके सीधे सवालों को घुमा-फिरा देता है, तो यह खतरे की घंटी है। एक पक्के रिश्ते की नींव हमेशा जीवनसाथी नहीं बन सकता। ऐसे लोग अक्सर रिश्ते में सच्चे नहीं होते और भविष्य में दुख का कारण बनते हैं। लंबे समय से साथ होने के बाद भी अगर आपका पार्टनर रिश्ते को एक पक्का नाम देने से घबराता है, तो सावधान हो जाएं। इसका सीधा अर्थ है कि वह इस रिश्ते को लेकर पूरी तरह से तैयार नहीं है और मौका मिलने पर आसानी से पीछे हट सकता है।